13.1.25

Dt

Pg 1 D+

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ- सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-14 कूप- मंडूक) -1
लेखक- स्वामीनाथ पांडेय
पुस्तक- नवतरंग- 4

सुप्रभात् प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा चौथी की पाठ्य पुस्तक नवतरंग-4 के पाठ-14 'कूप-मंडूक' को पढ़ेंगे।

पाठ को आगे पढ़ने से पहले हम इस पाठ के नाम 'कूप- मंडूक' का अर्थ समझ लेते हैं। 'कूप' का अर्थ है 'कुआँ' और मंडूक का अर्थ है 'मेंढक'।

आइए! पाठ को पढ़ना आरंभ करते हैं। बच्चो, अपने आपको सीमित दायरे में रखने से सोच-समझ भी सीमित ही रह जाती है। अतः यह आवश्यक है कि हम अपना दायरा बढ़ाएँ और तरह-तरह के अनुभव लें। तभी हमारी बुद्धि का विकास होता है।

मालवा गाँव के पास हरे-भरे खेत थे। पास में ही एक विशाल कुआँ था। वह कुआँ बहुत पुराना था। कुआँ पानी से भरा था। ... पानी से भरे उस कुएँ में अनेक प्रकार के जीव और मेंढक रहते थे।

उस कुएँ में एक मेंढक काफ़ी समय से रह रहा था। वह मेंढक बहुत बड़ा और बलिष्ठ (शक्तिशाली) था। वह अपने-आपपर बहुत घमंड करता था। एक दिन उसने कुएँ में रह रहे सभी जीवों को बुलाया और कहा, "मैं तुम्हारा राजा हूँ। आज से तुम सबको मेरी बात माननी होगी।"

(पृष्ठ- 1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

13.1.25

D
Pg 2 B+

कक्षा- चौथी शिक्षिका- सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-14 'कूप-मंडूक')

उनसे मेंढक ने बड़े रोब से कहा था। उसका रोबीला रंग-ढंग देखकर सबने उसके सामने सिर झुका दिए। सब एक स्वर में बोले, "हाँ-हाँ, आप हमारे राजा हैं।" उन्होंने मेंढक के डर से उसकी 'हाँ' में 'हाँ' मिला दी। उधर मेंढक प्रसन्नता से फूला न समाया। उसने अन्य जीवों के साथ कुएँ का भ्रमण किया। उसके साथियों ने उसकी जय-जयकार की। मेंढक स्वयं को किसी चक्रवर्ती सम्राट से कम नहीं समझ रहा था।

बच्चो! आज हम इस पाठ के भाग को यहीं समाप्त करते हैं। इसका शेष भाग अगले सप्ताह भेजा जाएगा।

अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:-

सब बच्चे पृष्ठ-106 पर दिए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। इस पाठ को उच्च स्वर में दो-तीन पढ़ेंगे।

शेष भाग अगले सप्ताह----!

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner